27

संस्कृतीकरण
(Sanskritization)

इस अध्याय में हम जानेंगे :

- संस्कृतीकरण का अर्थ
- संस्कृतीकरण की विशेषताएं
- संस्कृतीकरण के कारक
- संस्कृतीकरण की प्रक्रिया व सामाजिक परिवर्तन
- संस्कृतीकरण प्रक्रिया के आदर्श
- संस्कृतीकरण प्रक्रिया में दोष

समाजशास्त्रीय साहित्य में 'संस्कृतीकरण' की अवधारणा को लाने का श्रेय डॉ. एम. एन. श्रीनिवास को है। इस अवधारणा (concept) द्वारा आपने भारतीय जाति-प्रथा की संरचना व संस्तरण में होने वाले परिवर्तनों को समझाने का प्रयत्न किया है। उन्होंने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि आधुनिक भारत में निम्न जाति के सदस्य प्रायः ऊँची जातियों के संस्कारों व जीवन के ढंग (way of life) का अनुकरण कर रहे हैं और साथ ही जातीय संस्तरण (stratification) में उच्च स्थान या स्थिति को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं एवं उस प्रयत्न में सफल भी हो रहे हैं। इसके फलस्वरूप समाज में तथा निम्न जातियों स्थिति (caste status) व जीवन के ढंग में काफी परिवर्तन हो जाता है।

संस्कृतीकरण का अर्थ
(Meaning of Sanskritization)

संस्कृतीकरण की व्याख्या करते हुए **डॉ. एम. एन. श्रीनिवास** ने अपनी पुस्तक *'Change in Modern India'* में लिखा है, *"संस्कृतीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई निम्न हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा अन्य समूह किसी उच्च और प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और जीवन-पद्धति बदलता हो।"* आमतौर पर ऐसे परिवर्तन के बाद वह जाति, स्थानीय समाज में परम्परागत रूप

Scanned with CamScanner

में जातीय सोपान में जो स्थिति या स्थान (status) उसे मिला हुआ है, उससे ऊँचे स्थान का दावा करने लगती है। साधारणतः बहुत दिनों तक, और वास्तव में एक-दो पीढ़ियों तक, दावा आने के बाद ही उसे स्वीकृति मिलती है।

इस प्रकार एक हिन्दू की जीवन-स्थिति को परिशुद्ध व परिमार्जित करने के लिए आवश्यक कृत्यों या संस्कारों की योजना को 'संस्कृति' मान लिया जा सकता है। अतः संस्कृतीकरण वह क्रिया है जिसके द्वारा निम्न जाति या समूह के लोग अपनी जातीय या सामाजिक स्थिति को परिशुद्ध, परिमार्जित व उन्नत करने के उद्देश्य से उच्च जाति के आदर्शों मूल्यों, विचारों, कृतियों तथा संस्कारों को ग्रहण कर लेते हैं।

संस्कृतीकरण की विशेषताएं
(Characteristics of Sanskritization)

संस्कृतीकरण की अवधारणा को और भी अच्छी तरह स्पष्ट करने के लिए हम इसकी प्रमुख विशेषताओं पर विचार करेंगे, जो निम्नलिखित हैं–

(1) संस्कृतीकरण का सम्बन्ध मुख्यतः निम्न जातियों की जीवन-शैली में होने वाले परिवर्तनों से है। द्विज जातियों या प्रबल जातियों की प्रथाओं, परम्पराओं, देवी-देवताओं एवं जीवन शैली को अपनाकर जाति संस्तरण में ऊँचा उठने के प्रयत्न को हम संस्कृतीकरण कहते हैं।

(2) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया से सम्बन्धित जातियों में मात्र पदमूलक (Postitional) परिवर्तन होता है न कि संरचनात्मक (Structural)। कहने का तात्पर्य यह है कि जाति व्यवस्था की संरचना में कोई परिवर्तन नहीं होता है, बल्कि सम्बन्धित जाति के पद सोपानक्रम (Hierarchy) में चढ़ाव मात्र होता है।

(3) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया केवल निम्न हिन्दू जातियों में ही नहीं, बल्कि जनजातियों तथा अर्द्ध-जनजातीय समूहों में भी पाई जाती है। भील, गोंड, ओरॉव आदि जनजातीय समूहों ने हिन्दू जीवन-पद्धति को अपनाकर ऊँचा उठने का प्रयास किया है।

(4) संस्कृतीकरण सामाजिक गतिशीलता की एक सामूहिक प्रक्रिया (Co-operate Process) है न कि व्यक्तिगत। अर्थात् इसका सम्बन्ध किसी व्यक्ति या परिवार विशेष के जीवन में चलने वाली परिवर्तन की प्रक्रिया से नहीं है।

(5) भारतीय सन्दर्भ में संस्कृतीकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया रही है। इतिहासकार **के.एम. पणिक्कर** तथा **एम. एन. श्रीनिवास** ने वैदिककाल से अब तक अनेक जातियों द्वारा ऊँचा उठने के प्रयासों के उदाहरण दिए हैं।

(6) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया से गुजरने वाली जातियां संस्कृत साहित्य में उपलब्ध विचारों एवं मूल्यों को भी स्वीकार कर लेती हैं तथा पाप-पुण्य, संसार, धर्म-कर्म, माया और मोक्ष आदि शब्दों का प्रयोग अपनी बातचीत में भी करने लगती हैं।

(7) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के द्वारा सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के निमित्त एक विशेष संस्कृतीकरण करने वाली जातियां दो या तीन पीढ़ी पहले से अपना सम्बन्ध किसी उच्च जाति या प्रभुत्वसम्पन्न जाति से जोड़ती हैं।

Scanned with CamScanner

(8) संस्कृतीकरण कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो सहज भाव से अनवरत रूप से चलती रहे। चूँकि संस्कृतीकरण के अन्तर्गत एक लम्बे समय से स्थानीय परम्परागत सामाजिक नियमों का विरोध होता है। इसलिए प्रभुजाति के लोग संस्कृतीकरण का विरोध करते हैं। वे कभी यह नहीं चाहते हैं कि समाज के निम्न स्तर का व्यक्ति उनकी बराबरी में खड़ा हो जाए।

(9) **योगेन्द्र सिंह** संस्कृतीकरण को एक प्रत्याशी समाजीकरण (Anticipatory Socialization) की प्रक्रिया मानते हैं। संस्कृतीकरण से गुजरने वाली जाति अपने से उच्च जाति की संस्कृति को इस उम्मीद से अपनाती है कि उसे उस जाति की सदस्यता या सामाजिक स्थिति (Social Position) मिल जाएगी।

संस्कृतीकरण के कारक
(Factors of Sanskritization)

एम. एन. श्रीनिवास ने उन कारकों की भी चर्चा की है, जिसने संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया है। भारत की प्राचीन तथा आधुनिक राजनीतिक व्यवस्थाएं भी संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के अनुकूल रही हैं। प्राचीनकाल में क्षत्रिय एक ऐसा वर्ण रहा है, जिसमें समय-समय पर अनेक जातीय समूह सम्मिलित होते रहे हैं, जिसका प्रमुख आधार सम्बन्धित जाति के पास राजनीतिक शक्ति रही है। चारण या भाट जाति इस सन्दर्भ में विशेष भूमिका निभाती थी। आधुनिक काल में प्रजातन्त्रीकरण की प्रक्रिया ने भी संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को अनुकूल स्थिति प्रदान की है। संस्कृतीकरण के प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं–

(1) यातायात एवं जनसंचार के माध्यमों में क्रान्तिकारी परिवर्तन ने भी संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया है। परम्परागत संस्कृति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आया है। संस्कृतीकरण स्तर पर निम्न एवं उच्च जातियों के बीच विचार का भी आदान-प्रदान हुआ है। लघु एवं बृहत् परम्पराओं (Little and Great Traditions) के बीच अन्तःक्रियाएं भी बढ़ी हैं।

(2) समाज की पिछड़ी जातियों के उत्थान के निमित्त आर्थिक सुधार कार्यक्रमों ने भी उनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाया है। अब वे अपने जीवन स्तर को उच्च जातियों या प्रभुत्वसम्पन्न जातियों के अनुरूप बनाने में लगी हैं।

(3) शिक्षा वस्तुतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। शिक्षा ने पिछड़ी जातियों के शिक्षित लोगों को उच्च एवं प्रभुत्वसम्पन्न जातियों की जीवन शैली को अपनाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है।

(4) सामाजिक सुधार आन्दोलनों ने भी निम्न जातियों को अपनी स्थिति सुधारने की प्रेरणा दी है। ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज एवं गांधी जी के अस्पृश्यता निवारण आन्दोलनों ने भी निम्न जातियों के बीच परिवर्तन की प्रक्रिया को प्रोत्साहित किया। इससे भी संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।

(5) नगरीकरण की प्रक्रिया के कारण शहरों में जातीय भेद-भाव में कमी आई है। इससे उच्च जाति एवं प्रभुत्वसम्पन्न जातियों का निम्न जातियों पर नियन्त्रण भी शिथिल

Scanned with CamScanner